[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 5345 **G** **Your Roll No...............**

Unique Paper Code : 205555

Name of the Paper : Natak Ekanki vam Nibandh

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi Discipline**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7,7,7=21)

(क) तुम्हारे दुःख की बात भी जानती हूँ फिर भी मुझे अपराध का अनुभव नहीं होता। मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है! मेरे लिए वह संबंध और सब संबंधों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है ...।

अथवा

...आज शिल्पी पर अत्याचार का प्रहार हो रहा है। कला पर मदान्धता टूट पड़ी है। सौंदर्य को सत्ता पैरों के तले रौंद रही है। और कोणार्क - आपका सुनहरा सपना, जिस घोंसले में आपके अरमानों का पंछी बसेरा लेने जा रहा था - वही कोणार्क, एक पामर, अत्याचारी के हाथ का खिलौना बन जायेगा। आतंक के हाथों में जकड़ी हुई कला सिसकेगी। वही कारीगर की सबसे हार होगी, सबसे भारी हार।

अथवा

P.T.O.

दासी की पुत्री होकर भी मैं राजरानी बनी और हठ से मैंने इस पद के ग्रहण किया, और तुम राजा के पुत्र होकर इतने निस्तेज और डरपोक होगे, यह कभी मैंने स्वप्न में भी न सोचा था। बालक! मानव अपनी इच्छा-शक्ति से और पौरुष से ही कुछ होता है। जन्मसिद्ध तो कोई भी अधिकार दूसरों के समर्थन का सहारा चाहता है। विश्व में छोटे से बड़ा होना, यही प्रत्यक्ष नियम है।

(ख) यथार्थवाद की विशेषताओं में प्रधान है लघुता की ओर साहित्यिक दृष्टिपात। उसमें स्वभावत: दुख की प्रधानता और वेदना की अनुभूति आवश्यक है। लघुता से मेरा तात्पर्य है साहित्य के माने हुए सिद्धांत के अनुसार महत्ता के काल्पनिक चित्रण से अतिरिक्त व्यक्तिगत जीवन के दुख और अभावों का वास्तविक उल्लेख।

अथवा

मन की सारी भ्रांति को दूर करनेवाले देवदारु तुम्हें देखकर मन श्रद्धा से जो भर जाता है' वह अकारण नहीं है। तुम भूत भगवान हो' तुम वहम-मिटावन हो' तुम भ्रांति नसावन हो। तुम्हें दीर्घकाल से जानता था पर पहचानता नहीं था' अब पहचान भी रहा हूँ। तुम देवता के दुलारे हो, महादेव के प्यारे हो' तुम धन्य हो।

(ग) भावों की छानबीन करने पर मंगल का विधान करने वाले दो भाव ठहरते हैं - करुणा और प्रेम। करुणा की गति रक्षा की ओर होती है और प्रेम की रंजन की ओर। लोक में प्रथम साध्य रक्षा है। रंजन का अवसर उसके पीछे आता है। अत: साधनावस्था या प्रयत्नपक्ष को लेकर चलने वाले काव्यों का बीजभाव करुणा ही ठहरता है।

अथवा

आप बारम्बार अपने दो अति तुम तराक से भरे कामों का वर्णन करते हैं। एक विक्टोरिया मिमोरियल हाल और दूसरा दिल्ली - दरबार। पर जरा विचारिये तो यह तो काम "शो" हुए या "ड्यूटी" ?

विक्टोरिया मिमोरियल हाल चंद पेट भरे अमीरों के एक दो बार देख आने की चीज होगा। उससे दरिद्रों का कुछ दुःख घट जावेगा या भारतीय प्रजा की कुछ दशा उन्नत हो जावेगी, ऐसा तो आप भी न समझते होंगे।

2. हिन्दी नाटक के विकास की रूपरेखा स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

भारतेंदु-कालीन नाटकों की विशेषताएँ लिखिए।

3. 'कोणार्क' नाटक के आधार पर शिल्पी के प्रतिरोध को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'अजात शत्रु' नाटक के मूल उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

4. एकांकी के तत्वों के आधार पर 'रीढ़ की हड्डी' की समीक्षा कीजिए। (8)

अथवा

'शिवाजी का स्वरूप' एकांकी का मूल प्रतिपाद्य लिखिए।

5. शुक्लयुगीन निबंधों की विशेषताएँ लिखिए। (8)

अथवा

हिंदी निबंध के विकास में प्रसाद के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

6. हिंदी निबंध के विकास में हजारी प्रसाद द्विवेदी के योगदान की चर्चा कीजिए। (8)

अथवा

"शिवशंभू के चिट्ठे बनाम लार्ड कर्ज़न" निबंध अंग्रेजी साम्राज्यवाद के समक्ष चुनौती है' - इस कथन की पुष्टि कीजिए।